सुविचार
अपने दिल पर लिख लो कि साल में हर दिन सबसे अच्छा दिन है।

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

कुल पृष्ठ 14 | राजस्थान | मूल्य ₹ 5.00 | वर्ष 6, अंक 15, महानगर

सेंसेक्स 57,991.11 -200.18
डॉलर 82.34 +0.04

तापमान (डिग्री सेल्सियस)

	न्यूनतम	अधिकतम	आज का अनुमान (न्यूनतम)
जयपुर	22.9	31.0	23.0
दिल्ली	20.3	24.3	21.0
मुंबई	24.5	31.5	25.0

dainikbhaskar.com | झुंझुनूं, मंगलवार, 11 अक्टूबर, 2022 | कार्तिक, कृष्ण पक्ष-2, 2079 | 12 राज्य | 61 संस्करण

शेखावाटी भास्कर

हमारे वैज्ञानिकों की बड़ी उपलब्धि • स्मार्टफोन आधारित हैंडहेल्ड कोल्पोस्कोप डिवाइस बनाया, मोबाइल की तरह चार्ज होगा

सीरी ने सर्वाइकल कैंसर जांच की देशी तकनीक विकसित की

भास्कर न्यूज | पिलानी

हमारे वैज्ञानिकों ने सर्वाइकल कैंसर (बच्चेदानी के मुंह के कैंसर) की जांच के लिए स्वदेशी तकनीक विकसित कर स्वास्थ्य एवं चिकित्सा के क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है। पिलानी स्थित सीएसआईआर-सीरी के वैज्ञानिक डॉ. सत्यम श्रीवास्तव एवं उनकी टीम ने सर्वाइकल कैंसर जांच में आईओटी सक्षम स्मार्टफोन आधारित हैंडहेल्ड कोल्पोस्कोप विकसित किया है। सीरी के वैज्ञानिक डॉ. सत्यम श्रीवास्तव के नेतृत्व में संस्थान के शोधकर्ताओं की टीम ने मेक इन इंडिया मेडिकल मिशन परियोजना के तहत सर्विक्स कैंसर की स्थिति का पता लगाने एवं इसके निदान में एक स्वदेशी आईओटी सक्षम हैंडहेल्ड कोल्पोस्कोप तकनीक विकसित की गई है। यह तकनीक त्वरित डेटा विजुअलाइजेशन और विश्लेषण के लिए स्मार्टफोन आधारित ऐप से कनेक्टिविटी देती है। सर्वाइकल कैंसर का समय से पूर्व पता लगाने के लिए सॉफ्टवेयर आधारित यह तकनीक रोगी व डॉक्टर के बीच सीधे संपर्क के लिए क्लाउड कनेक्टिविटी भी देती है। ऑन-डिवाइस रिचार्जेबल बैटरी सपोर्ट होने से जहां बिजली नहीं होगी वहां यह कारगर सिद्ध होगी।

पिलानी. तकनीक का हस्तांतरण करते सीरी के वैज्ञानिक।

क्या है कॉल्पोस्कोपी और कॉल्पोस्कोप

कॉल्पोस्कोपी एक चिकित्सा प्रक्रिया है जिसका उपयोग गर्भाशय ग्रीवा (सर्विक्स) की स्थिति का पता लगाने और इसमें विकसित हो रहे कैंसर का निदान करने में किया जाता है। उपकरण कॉल्पोस्कोपी के जरिए सर्वाइकल कैंसर के उपचार में सहायता करता है। देश में हर साल बड़ी संख्या में कॉल्पोस्कोप उपकरणों का आयात किया जाता है। ये काफी महंगे एवं भारी होते हैं। सीरी ने इस तकनीक की प्रौद्योगिकी नोयडा की एक कंपनी को हस्तांतरित की है। कंपनी के निदेशक राजीव शर्मा के अनुसार कंपनी अगले 3 से 6 महीनों में स्वदेशी कॉल्पोस्कोप देश के बाजार में उपलब्ध करा देगी। एमओयू के दौरान सीरी निदेशक डॉ. पीसी पंचरिया, डॉ. सत्यम श्रीवास्तव व टीम मौजूद रही।

हमारे वैज्ञानिकों ने कॉल्पोस्कोप की स्वदेशी तकनीक विकसित की है। डिवाइस विदेशों से आयातित उपकरण से काफी किफायती होगा। इसमें कई नए फीचर्स भी जोड़े गए हैं। इस डिवाइस को रिचार्जेबल बैटरी का सपोर्ट दिया गया है।

-डॉ. पीसी पंचारिया, निदेशक